



**अन्तरा
शब्दशक्ति**

प्रकाशन एवं बहुउद्देशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

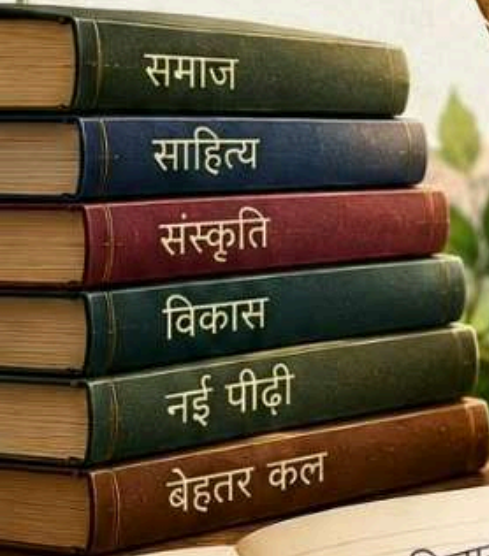
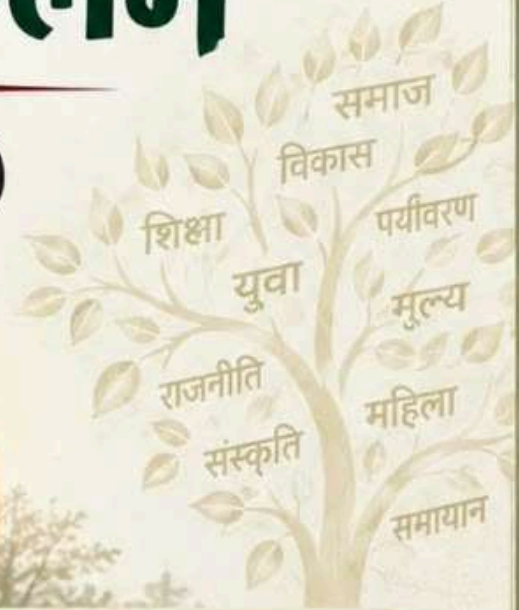
शब्द
से संवेदना तक...
लेखन से
परिवर्तन तक...

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

विचार...
चिंतन...
संवाद...
और
एक बेहतर
कल की ओर...

‘समसामयिक प्रश्नों पर आपकी कलम’

(लेख प्रतियोगिता)



रचनाकार :-

विशाखा सिंघल

विचारों की
स्याही से
बदलता समाज...

आयोजक:-

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी (म.प्र.)



अन्तरा शब्दशक्ति

प्रकाशन एवं बहुददेशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

शब्द से संवेदन तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक : Webcoodee.com
मुख्य कार्यालय : 15 नेहरू चौक, वारासिवनी,
जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331



Antrashabdshaktiprakashan

संपर्क : 9009423393
ईमेल : antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाइट : www.antrashabdshakti.com

वैधानिक सूचना

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएँ संबंधित रचनाकारों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ हैं।
प्रत्येक रचना में व्यक्त विचार, कथ्य एवं अभिमत के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उत्तरदायी हैं।
रचनाओं के चयन एवं प्रकाशन का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना
एवं हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करना है।

हिन्दी
से ही है
पहचान...

विचार...
संवाद...
समाज...
और एक बेहतर कल...

लेख प्रतियोगिता

लेखक/लेखिका - विशाखा सिंघल

वर्तमान में सबसे बड़ी और विकराल समस्या



वर्तमान में सबसे बड़ी और विकराल समस्या

जब तक जीवन है तब तक उसमें समस्याएं भी होंगी और उनसे जुड़ी बाधाएं, निराशाएं भी होंगी किंतु सफल मनुष्य वह है जो इन समस्याओं में भगवान पर विश्वास रख सदैव अपने कर्म में तत्परता से लीन रहें और उसमें से समाधान भी खोज लें। इसके लिए उसे धीरज, निरन्तरता, साहस, मेहनत रूपी साधनों को अपनाना होगा।

कबीरदास जी का दोहा भी है-

" धीरे धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय
माली सींचे सौ घड़ा, ऋतु आए फल होय। "

जिस प्रकार प्रत्येक काम अपने सही समय पर ही पूरा होता है, उसके लिए मन में अधीरता नहीं लानी चाहिए।

बेशक आज हम Gen-जी, Gen- beta के प्रचलन की होड़ में आ रहे हैं, स्वयं को आधुनिक बता रहे हैं किंतु कहीं ना कहीं हम अपनी मूलभूत जड़ों से अनजान होते जा रहे हैं या उसे समझना नहीं चाहते अथवा समझाने वाले अब हममें रुचि नहीं दिखा रहे या हम सीखने में रुचि नहीं दिखा रहे।

हम सभी एक अंधी दौड़ में हिस्सा ले उसके पीछे भागने में लगे हैं। उसमें हिस्सा अवश्य लो किंतु यह सोचकर नहीं कि मुझे दूसरे को पराजित करना है या उसे चिढ़ाना है अपितु यह सोच कर हिस्सा ले कि अपनी तरफ से मुझे कड़ी मेहनत कर अपना शत प्रतिशत देना है, जिससे मुझे वो कार्य करते समय या उस कार्य के करने के बाद आत्मिक शांति की अनुभूति हो।

जब हम स्वयं से, स्वयं के कार्य से खुश होंगे तो हमें अन्य अनेक कार्यों को करने की दोगुनी ऊर्जा परमात्मा स्वयं देते हैं किंतु एक बात यह भी ध्यान रखनी चाहिए यदि हमारे कार्य करने में या कार्य करते समय कोई त्रुटि हो जाए तो उसमें सुधार की संभावना भी रखनी चाहिए। तभी हम अपना भला और अन्यो का भला कर सकते हैं।

हम सभी के पास अपने अपने दृष्टिकोण से कोई ना कोई छोटी या बड़ी समस्या होती है किंतु उसका समाधान या तो देर से मिलता है या समझ नहीं आता।।

वर्तमान की आज विकराल समस्या

आज मानव जीवन अपनी सुविधाओं के चलते दुविधाओं से ग्रस्त है जिसके कारण परिस्थिति से प्रभावित होकर वह हताशा एवं निराशा में अपने जीवन को गलत दिशा की ओर मोड़ लेते हैं। आज हर उम्र में प्रत्येक व्यक्ति के साथ उसकी अपनी समस्याएं जुड़ी हुई हैं।

- 1 शिक्षा का बढ़ता तनाव- स्कूल हो या कॉलेज या अन्य कोई परीक्षा बच्चों को उनमें अच्छे अंक लाने का दबाव रहता है फिर मनपसंद नौकरी या सरकारी नौकरी मिलने का दबाव आज निरन्तर बढ़ता जा रहा है।
- 2 हाउस मेकर की बढ़ती ज़िम्मेदारियां- आज एक हाउस मेकर को सभी का ध्यान रखते समय उनकी पसंद नापसन्द का ध्यान रखना कभी कभी उसके लिए मानसिक तनाव बन जाता है जब उसे नकारात्मक रुझान मिलता है । जिससे उसके स्वयं के स्वास्थ्य की अवहेलना हो जाती है।
- 3 प्रतिस्पर्धा की होड़- ऑफिस, दफ्तर, दुकान, बिज़नेस से जुड़े लोगो को अपने अपने काम को सुपर दिखाने की होड़ का बढ़ता तनाव भी आज एक समस्या बन गया है।
- 4 वर्क फ्रॉम होम का बढ़ता चलन - आज के दौर का नया प्रचलन वर्क फ्रॉम होम में पुरुष हो या स्त्री दोनों को अपना बेस्ट देने के कारण स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं बढ़ रही हैं।
- 5 संसाधनों का दुरुपयोग- किसी भी कार्यों को आसान करने के लिए आज सुविधाओं का बढ़ता प्रयोग हो रहा है किंतु उसके दुष्प्रभाव भी बढ़ रहे हैं। मोबाइल की अति बच्चों, बड़ों में लगातार बढ़ रही है इसमें गेम से लेकर अधिक देर तक फोन पर बातें करना हो या रील का बढ़ता प्रचलन हो । यह माध्यम मनोरंजन के साथ साथ शैक्षणिक, कला उपयोगी, रुचि बढ़ाने में सहायता करता है, अतः इसका प्रयोग उच्च जीवन बनाने में करना चाहिए।
- 6 संस्कारों का दोहन- वर्तमान समय में सकारात्मक कम एवं नकारात्मक रूप में संस्कारों का दोहन हो रहा है। संस्कार हमारे पूर्वजों, पितरों एवं बड़ों की सौभाग्यशाली दे हैं जिसका हमें विशेष ध्यान रखना चाहिए, आगे चलकर एक मनुष्य के जीवन निर्माण में अन्य पहलुओं के साथ साथ इनका भी महत्वपूर्ण योगदान होता है।

- 7 रिश्तों एवं दाम्पत्य जीवन में बढ़ती दूरियां- आज अनेक समस्याओं में सबसे बड़ी समस्या है आपसी रिश्तों के मेलजोल में कमी, दाम्पत्य जीवन में आपसी व्यवहार, कार्यशैली अथवा घर के या समाज के किसी व्यक्ति के दृष्टिकोण को ही पूर्णतः बिना जांच पड़ताल के उचित मानते हुए आपस में झगड़ा करना अथवा अभद्र व्यवहार करना एवं आस पास में तनावपूर्ण परिवेश के निर्माण करना।

***** निष्कर्ष *****

आज किसी भी मानव के पास बैठ आप किसी भी समस्या के विषय में बात कर लें उसके पास से एक नहीं, अपितु अनेक उस विषय में से ही समस्याएं निकलती दिखेंगी जिसमें से उसे स्वयं अथवा अन्य व्यक्ति को समाधान की झलक कम दिखेगी।

जिसका प्रभाव यह हो रहा है कि आज का मानव सफलता पर तो पहुँच जाता है किंतु अस्पताल की दवाइयों और बिल साथ में चलते रहते हैं।

आज इन सबसे छुटकारा पाने की आशा से अनेक स्थानों पर, ऑनलाइन सेमिनार, यूट्यूब पर प्रोग्राम के माध्यम से आयोजित किये जा रहे हैं, अस्पताल में डॉक्टर्स दवाइयों के साथ साथ योगा पर एवं खान पान पर विशेष चर्चा कर अपने अनुभवी टिप्स भी देते हैं।

अतः वर्तमान समय में समस्या के साथ साथ उसके समाधान पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है जिसके चलते तनाव, डिप्रेशन आदि बीमारियां कम हो सकें एवं सुसाइड नहीं हो।

यह विषय समाज के ऐसे विषय हैं जो घर, ऑफिस, मीटिंग्स, दुकान, फोन, टी.वी. इत्यादि पर चर्चा करते एवं उनकी बढ़ती संख्याओं में मिलेंगे। हमें समाधान की ओर कदम बढ़ाना है, समस्याएं तो जीवन का हिस्सा बढ़ती घटती रहेंगी।

"भगवान पर भरोसा कर, अपने कार्यों को मेहनत से कर, दूसरों की आलोचना ना कर एवं सबसे महत्वपूर्ण अपने स्वास्थ्य का ध्यान रख एवं हर पल को खुशी से जीना है ऐसी मानसिकता के साथ हम कार्य करेंगे तभी हम अपनी एवं दूसरों की सहायता कर सकेंगे।"

- विशाखा सिंघल

लेखक परिचय

नाम – विशाखा सिंघल
ग्राम - (त्री नगर, दिल्ली)





अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा
शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुदेशीय संस्था

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

सम्मान-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि

आ.....**विशाखा सिंघल**.....जी

ने हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित “**एक लेख प्रतियोगिता**” में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए **समसामयिक विषय पर अपने विचारों** को प्रभावी एवं सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया।

उनकी साहित्यिक **अभिव्यक्ति** एवं रचनात्मक सहभागिता की सराहना करते हुए **अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन** की ओर से यह **सम्मान-पत्र** सादर प्रदान किया जाता है।

आपकी सृजनशीलता एवं साहित्यिक यात्रा के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी विचारों को विस्तार देती है... समाज को जोड़ती है...

हिन्दी
हमारी पहचान...
हमारी शक्ति...

प्रीति सुराना

समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं संस्था

डॉ. प्रीति समकित सुराना



शब्द से संवेदन तक...

लेखन से परिवर्तन तक...

